RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-10
October-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

'बकरी' नाटक में गांधी दर्शन का प्रभाव

डॉ.करसन रावत
एसो. प्रोफेसर, नरोडा कॉलेज, अहमदाबाद, गुजरात

पूरा देश इस वर्ष महात्मा गांधी की 150 वी जन्म जयंती मना रहा है । महात्मा गांधी को हम प्यार से बापू भी कहते हैं । जिन्होंने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलना सिखाया था । गांधी जी ने बिना शस्त्र उठाए अंग्रेजों को झुकने पर मजबूर किया था । आज से 150 साल पहले ही महात्मा गांधी के विचार ऐसे थे, जो आपको आज भी और आगे भी जीवन के हर मोड़ पर सही लगेंगे । गांधी को हम फिर खोजें और प्रेम व अहिंसा की गतिशीलता को समझकर युवा पीढ़ी के सामने गांधी को ले जाएं । गांधी आज एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गए हैं और ऐसे में इस 150 वीं जयंती के अवसर पर उन्हें उनके समग्र रूप में लाने की ऐतिहासिक भूमिका हम पर आई है । गांधीजी के विचारों तथा दर्शन से प्रभावित होकर स्वा. आधुनिक हिन्दी नाटककारों ने गांधीजी के नाम पर देश की राजनीति को आधार बनाकर कई नाटक लिखे गये । सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाटक बकरी आज उतना ही प्रासंगिक है ।

'बकरी' 1974 में प्रकाशित आधुनिक हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का राजनीतिक व्यंग्य नाटक माना जाता है । 'जन नाट्य मंच' ने इस नाटक को कई बार रंगमंच पर प्रस्तुत कर पूरे देश में लोक प्रिय बना दिया था । स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में कई प्रकार की विसंगतियाँ पैदा हुई जिसके कारण आम जनता का विश्वास वर्तमान राज नेताओं से कम होता गया । वर्तमान राजनीति पर व्यंग्यात्मक शैली में हिन्दी नाटककारों ने अपने नाटकों का कथ्य बनाकर रंगमंच के माध्यम से आम जनता तक पहुचाया । 'बकरी' नाटक समकालीन राजनीति के विदूषकीय एवं विश्वासघाती चरित्र को उजागर करता है । इस नाटक में 1970 के बाद भारत में पैदा हुई परिस्थितियों को लक्ष्य बनाया गया है । सर्वेश्वर ने देश की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों को आधार बनाकर आम जनता के असंतोष और विद्रोह-भाव को इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है । राजनीतिक क्षेत्र के उन स्वार्थ व्यक्तियों की मनोवृत्ति व्यक्त करता है, जो गांधीवादी विचारों के साथ प्रति जनता की आस्था का लाभ उठाकर किर्सी और प्रतिष्ठा के चिपके हुए हैं । इसमें उस ग्रामीण जनता को पीड़न का शिकार बनाया जा रहा है । 'बकरी' नाटक में बकरी उस गरीब और निरीह जनता का प्रतीक है, जिससे तथाकथित गांधीवादी नेता पहले पैसा दुहते हैं, फिर वोट दुहते हैं और फिर कुर्सी ।

'बकरी' नाटक में तीन डाकू एक सिपाही और एक गरीब औरत पात्रों के रूप में प्रस्तुत किये हैं । गरीब औरत की बकरी को हड़प लेने का प्रसंग नाटक के केन्द्र में रखा गया है । चारों ओर 'बकरी स्मारक निधि', 'बकरी सेवा संघ' जैसी संस्थाएँ खुली हुई हैं । फिर भी गरीब औरत की बकरी की रक्षा नहीं हो पाती । औरत की पुकार सुनने वाला कोई नहीं है । समस्त व्यवस्थातंत्र और सरकारी संस्थान आम आदमी के साथ अतिचार कर रहे हैं । राजनीतिक चुनाव सम्बन्धी हथकण्डों का जाल बन गई है । जो डाकू है, वही आगे चलकर नेता बन जाता है , नेता लम्बे भाषण देता है और झूठे वायदे करता है । सारा समाज विसंगतियों का शिकार है । एक युवक इन विसंगतियों का विरोध करता है । वह जनता को उत्तेजित करता है और नाटक को को एक समाधान की ओर ले जाना चाहता है । नाटक का दुर्जनसिंह पात्र दुनिया को चरगाह समझता है, पर शोषितों के अन्दर की आग को वह नहीं देख पाता । तमाम कोशिशों के बाद जब विपती को बकरी वापिस नहीं मिलती और साबित हो जाता है कि चुनाव जीतने की खुशी में उसका गोस्त पक गया तो अन्ततः जन-विद्रोह फूट पड़ता है और राजनीतिज्ञों के वेश में छिपे लुटेरे एवं आतंकवादी बोध लिए जाते हैं । जनता की अदालत उसका फैंसला करेगी । विद्रोह की विजय के साथ नाटक समाप्त हो जाता है ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

समकालीन राजनीति में व्याप्त छल छद्म और उनके जन विरोधी एवं अलोकतांत्रिक चरित्र पर प्रहार करता यह नाटक जनता विशेषकर ग्रामीणों के उत्पीड़न और उनके शोषण को प्रभावशाली ढंग से उजागर करता है। नाट्य शिल्प की बात करें तो इसे नौटंकी और पारसी थिएटर के शैलीगत प्रवाह में बांधते हुए हास्य की जाजम पर खड़ा किया गया है।

'बकरी' नाटक में तीन डकैत दुर्जन सिंह, कर्मवीर और सत्यवीर की कहानी है। जिन्हें एक दिन भिश्ती का एक गीत 'बकरी को क्या पता था, मशक बनकर रहेगी' सुनकर एक तरकीब सूझती है। वह अपने साथी को बकरी का इंतजाम करने को कहते हैं। साथी गरीब महिला विपति की बकरी चुरा ले आता है। फिर वह प्रचारित करते हैं कि इस बकरी की मां गांधीजी की बकरी थी और इस बकरी में दैवीय शक्ति है। तीनों डकैत नेता बन जाते हैं और बकरी के नाम पर एक आश्रम स्थापित करते हैं। फिर शुरू होता है गांव वालों को लूटने का सिलसिला। भोले-भाले ग्रामीण बकरी के नाम पर खूब दौलत लुटा देते हैं। इसके बाद डकैत कर्मवीर चुनाव लड़ता है और जीत भी जाता है। फिर एक पढ़ा-लिखा युवक उनकी असलियत ग्रामीणों को बताता है। धीरे-धीरे ग्रामीणों को समझ में आने लगता है कि चांडाल चौकड़ी उन्हें गुमराह कर लूट रही है। सो, ग्रामीण उनके विरोध में उतर आए और जेल भिजवाकर ही दम लिया।

इस नाटक में बकरी परोक्ष में रहकर भी एक समग्र रूप अर्जित कर लेती है । यह बकरी दूध देने वाली, घास चरने वाली नहीं है, वह कुर्सी, धन और प्रतिष्ठा देती है साथ ही स्वामी की बुद्धि तथा बहादुरी को चरती है । इस प्रकार बकरी सुविधा एवं सत्ताभागी वर्ग का आधार बनती है । डॉ. जयदेव तनेजा 'बकरी' नाटक पर विचार करते हुए लिखते है कि - 'बकरी' आम आदमी की पीड़ा को आम आदमी की भाषा में आम आदमी के सामने प्रस्तुत करने वाला हिन्दी का एक महत्वपूर्ण नाटक है ।"[1] राजनीतिक दल चुनाव प्रचार के दौरान वायदे करते हैं, मगर सत्ता पर आने के बाद सारे वायदे भूल जाते हैं । भोली-भाली जनता को केवल सपने दिखाते हैं । सक्सेना ने 'बकरी' नाटक में व्यंग्यात्मक शैली में किया है । नाटककार स्वयंम नाटक की भूमिका में लिखता है कि- "यह नाटक देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति में और अधिक सार्थक हो उठा है और इस स्थिति से टकराने वाली और मुह चुराने वाली ताकतों का और अधिक ध्रुविकरण कराता है । गाँधीवाद का मुखौटा लगाकर आज भी सत्ता की राजनीति की जा रही है और देश की जनता को छला जा रहा है ।"[2] यहाँ बकरी गरीब जनता की प्रतीक है, जिसका गाँधी के नाम पर उनके अनुयायी दोहन कर रहे हैं । नाटक का दुर्जन कहता है - "इस बकरी ने हमेशा दिया है । आपको आजादी, एकता दी, प्रेम दिया । आज भी बहुत कुछ देने को मुंतजिर है ।"[3] लेखक नाटक में गाँधी की बकरी का परिचय देते हुए कहता है कि- "यह पचपन करोड़ की बकरी है बीस रूपये की नहीं ।"[4] युवक पात्र के द्वारा सक्सेना वर्तमान राजनीति पर व्यंग्य करते है - "यही कि वोट, चुनाव सब मजाक हो गया है । सब झूठ पर चल रहा है । गरीबों की बकरी पकड़कर उनसे पहले पैसा दुहा । अब वोट दुह रहे हैं, फिर पद और कुर्सी दुहेंगे ।"[5] समकाली नाटकों में लेखकों ने व्यंग्यात्मक शैली के आधार पर वर्तमान राजनीति का विषम परिस्थि का चित्रण किया गया है । 'बकरी' नाटक में वर्तमान राजनीति को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है -

गोली बोले धायं-धांय
जनता बोले कांय कांय
नेता बोले भांय भांय
हर गली में सांय सांय
तुझसे है यही मेरी फरियाद
लोकतंत्र जिंदाबाद जिंदाबाद ।[6]

'बकरी' नाटक में बकरी को गरीब जनता का प्रतीक माना गया है । आज की बकरी गांधीजी के नाम पर कमाने वाली राजनैतिक टोली के स्वार्थपरायणता का साधन बनती है । नाटक का युवक पात्र कहता है - "ठीक है । कल को आप लोगों को भी जेल ले जाएँगे । आज बकरी गाँधीजी की हुई, कल को गाय कृष्ण जी की हो जायेगी, बैल बलराम जी के हो जाएँगे । ये सब ठग हैं ठग..।"[7] राजनेता बकरी रूपी गरीब जनता का समय-समय पर दोहन करते रहते हैं, गरीबों का शोषण करते रहते हैं । 'सक्सेना ने यह स्वीकार किया है कि "नाटक देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति में और अधिक सार्थक हो उठा है और इस स्थिति से टकराने वाली और

मुँह चुराने वाली ताकतों का और अधिक ध्रुवीकरण करता है । गाँधीवाद का मुखौटा लगाकर आज भी सत्ता की राजनीति की जा रही है और जनता को लगातार छला जा रहा है । लेखक चाहता है कि देश की राजनीति स्थिति सुधरे और यह नाटक अपने निहित व्यंग्यार्थ में शीघ्र से शीघ्र असंगत हो जाए ।"[8] जनता को छलने के लिए राजनीतिज्ञों द्वारा अपनाये गये हथकंड़ो का पर्दाफास बकरी' नाटक में किया गया है ।

संदर्भ संकेतः

1. समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच - डॉ. जयदेव तनेजा, पृ. 44
2. बकरी - स. सक्सेना, मुख पृष्ठ.
3. वही. - पृ. 48
4. वही. - पृ. 25
5. वही.- पृ. 34
6. वही.- पृ. 08
7. वही. पृ- 31
8. वही. पृ. 07

RRIJM 2015, All Rights Reserved